

रविवार 19 जनवरी, 2025

विषय— जिंदगी

स्वर्ण पाठ: प्रेरितों के काम 26: 8

"जब कि परमेश्वर मरे हुआं को जिलाता है, तो तुम्हारे यहां यह बात क्यों विश्वास के योग्य नहीं समझी जाती?"

उत्तरदायी अध्ययन: यूहन्ना 5: 19, 21, 24-29

- ¹⁹ इस पर यीशु ने उन से कहा।
- ²¹ क्योंकि जैसा पिता मरे हुआं को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है।
- ²⁴ मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।
- ²⁵ मैं तुम से सच सच कहता हूं, वह समय आता है, और अब है, जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएंगे।
- ²⁶ क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे।
- ²⁷ वरन उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इसलिये कि वह मनुष्य का पुत्र है।
- ²⁸ इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे।
- ²⁹ जिन्होंने ने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने ने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. उत्पत्ति 5: 23, 24

- ²³ और हनोक की कुल अवस्था तीन सौ पैंसठ वर्ष की हुई।
- ²⁴ और हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एडु ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

2. इब्रानियों 11: 5

- 5 विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया, कि मृत्यु को न देखे, और उसका पता नहीं मिला; क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था, और उसके उठाए जाने से पहिले उस की यह गवाही दी गई थी, कि उस ने परमेश्वर को प्रसन्न किया है।

3. मत्ती 3: 13-17

- 13 उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उस से बपतिस्मा लेने आया।
14 परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, कि मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है?
15 यीशु ने उस को यह उत्तर दिया, कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है, तब उस ने उस की बात मान ली।
16 और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाई उतरते और अपने ऊपर आते देखा।
17 और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ॥

4. यूहन्ना 11: 1-11, 15, 17, 20 (से:), 21-27, 32-34, 38, 39 (से 1st), 40 (कहा)-44

- 1 मरियम और उस की बहिन मारथा के गांव बैतनिय्याह का लाजर नाम एक मनुष्य बीमार था।
2 यह वही मरियम थी जिस ने प्रभु पर इत्र डालकर उसके पांवों को अपने बालों से पोंछा था, इसी का भाई लाजर बीमार था।
3 सो उस की बहिनो ने उसे कहला भेजा, कि हे प्रभु, देख, जिस से तू प्रीति रखता है, वह बीमार है।
4 यह सुनकर यीशु ने कहा, यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।
5 और यीशु मारथा और उस की बहन और लाजर से प्रेम रखता था।
6 सो जब उस ने सुना, कि वह बीमार है, तो जिस स्थान पर वह था, वहां दो दिन और ठहर गया।
7 फिर इस के बाद उस ने चेलों से कहा, कि आओ, हम फिर यहूदिया को चलें।
8 चेलों ने उस से कहा, हे रब्बी, अभी तो यहूदी तुझे पत्थरवाह करना चाहते थे, और क्या तू फिर भी वहीं जाता है?
9 यीशु ने उत्तर दिया, क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते यदि कोई दिन को चले, तो ठोकर नहीं खाता है, क्योंकि इस जगत का उजाला देखता है।
10 परन्तु यदि कोई रात को चले, तो ठोकर खाता है, क्योंकि उस में प्रकाश नहीं।
11 कि हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूँ।

- 15 और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूँ कि मैं वहाँ न था जिस से तुम विश्वास करो, परन्तु अब आओ, हम उसके पास चलें।
- 17 सो यीशु को आकर यह मालूम हुआ कि उसे कब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं।
- 20 सो मारथा यीशु के आने का समचार सुनकर उस से भेंट करने को गई, परन्तु मरियम घर में बैठी रही।
- 21 मारथा ने यीशु से कहा, हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता।
- 22 और अब भी मैं जानती हूँ, कि जो कुछ तू परमेश्वर से मांगेगा, परमेश्वर तुझे देगा।
- 23 यीशु ने उस से कहा, तेरा भाई जी उठेगा।
- 24 मारथा ने उस से कहा, मैं जानती हूँ, कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।
- 25 यीशु ने उस से कहा, पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा।
- 26 और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा, क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?
- 27 उस ने उस से कहा, हां हे प्रभु, मैं विश्वास कर चुकी हूँ, कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था, वह तू ही है।
- 32 जब मरियम वहाँ पहुँची जहाँ यीशु था, तो उसे देखते ही उसके पाँवों पर गिर के कहा, हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई न मरता।
- 33 जब यीशु ने उस को और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास हुआ।
- 34 जब यीशु ने उस को और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास हुआ, और घबरा कर कहा, तुम ने उसे कहाँ रखा है?
- 35 यीशु के आंसू बहने लगे।
- 36 तब यहूदी कहने लगे, देखो, वह उस से कैसी प्रीति रखता था।
- 38 यीशु मन में फिर बहुत ही उदास होकर कब्र पर आया, वह एक गुफा थी, और एक पत्थर उस पर धरा था।
- 39 यीशु ने कहा; पत्थर को उठाओ: उस मरे हुए की बहिन मारथा उस से कहने लगी, हे प्रभु, उस में से अब तो दुर्गंध आती है क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए।
- 40 यीशु ने उस से कहा, क्या मैं ने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी।
- 41 तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया, फिर यीशु ने आंखें उठाकर कहा, हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तू ने मेरी सुन ली है।
- 42 और मैं जानता था, कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उन के कारण मैं ने यह कहा, जिस से कि वे विश्वास करें, कि तू ने मुझे भेजा है।
- 43 यह कहकर उस ने बड़े शब्द से पुकारा, कि हे लाजर, निकल आ।
- 44 जो मर गया था, वह कफन से हाथ पांव बन्धे हुए निकल आया और उसका मुँह अंगोछे से लिपटा हुआ तें यीशु ने उन से कहा, उसे खोलकर जाने दो॥

5. यूहन्ना 17: 1-3

- 1 यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखे आकाश की ओर उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।
- 2 क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तू ने उस को दिया है, उन सब को वह अनन्त जीवन दे।
- 3 और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने।

6. 1 यूहन्ना 5: 11, 13, 20

- 11 और वह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है: और यह जीवन उसके पुत्र में है।
- 13 मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा है; कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।
- 20 और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उस ने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उस में जो सत्य है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं: सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 586: 9-10

पिता। अनन्त जीवन; एक मन; ईश्वरीय सिद्धांत, जिसे आमतौर पर ईश्वर कहा जाता है।

2. 331: 11 (यह)-17

शास्त्रों का अर्थ है कि ईश्वर सब कुछ है। इससे यह पता चलता है कि ईश्वरीय मन और उनके विचारों के अलावा किसी भी चीज़ में वास्तविकता या अस्तित्व नहीं है। शास्त्र यह भी घोषणा करते हैं कि ईश्वर आत्मा है। इसलिए आत्मा में सब कुछ सामंजस्य है, और कोई मतभेद नहीं हो सकता; सब कुछ जीवन है, और कोई मृत्यु नहीं है। भगवान के ब्रह्मांड में सब कुछ उसे व्यक्त करता है।

3. 214: 5-8

यदि हनोक की धारणा उसकी भौतिक इंद्रियों के सामने सबूतों तक ही सीमित थी, तो वह कभी भी

"ईश्वर के साथ नहीं चल सकता था," और न ही अनन्त जीवन के प्रदर्शन में निर्देशित हो सकता था।

4. 245: 27 केवल

गलतियाँ कभी नहीं होती हैं।

5. 213: 11-15

अच्छाई की ओर हर कदम भौतिकता से प्रस्थान है, और ईश्वर, आत्मा की ओर एक प्रवृत्ति है। भौतिक सिद्धांत सीमित, अस्थायी और असंगत के प्रति विपरीत आकर्षण द्वारा अनंत और शाश्वत अच्छे के प्रति इस आकर्षण को आंशिक रूप से पंगु बना देते हैं।

6. 241: 13-18

बाइबल आत्मा के नवीकरण द्वारा शरीर के परिवर्तन को सिखाती है। यदि धर्मग्रंथों के आध्यात्मिक अर्थ को हटा दिया जाए, तो यह संकलन मनुष्यों के लिए उतना ही उपयोगी होगा, जितना कि चन्द्रमा की किरणें बर्फ की नदी को पिघलाने के लिए उपयोगी नहीं होतीं। अभ्यास के बिना उपदेश देना युगों की भूल है।

7. 428: 30-10

लेखक ने आशाहीन जैविक बीमारी को ठीक किया है, और जीवन और स्वास्थ्य को भगवान की समझ के माध्यम से उठाया है जो कि मर रहा था। यह मानना कि पाप सर्वशक्तिमान और अनन्त जीवन पर हावी हो सकता है, यह पाप है और इस जीवन को इस समझ के साथ प्रकाश में लाया जाना चाहिए कि कोई मृत्यु नहीं है, साथ ही साथ आत्मा के अन्य अनुग्रह द्वारा भी। हालांकि, हमें नियंत्रण के अधिक सरल प्रदर्शनों के साथ शुरू करना चाहिए, और जितनी जल्दी हम शुरू करेंगे, उतना ही बेहतर होगा। अंतिम प्रदर्शन अपनी उपलब्धि के लिए समय लेता है। चलते समय, हम आंख से निर्देशित होते हैं। हम अपने पैरों से पहले देखते हैं, और अगर हम बुद्धिमान हैं, तो हम आध्यात्मिक उन्नति की रेखा में एक भी कदम से परे हैं।

8. 428: 15-21

हमें अस्तित्व को संरक्षित करना चाहिए, न कि "अज्ञात भगवान को" जिसे हम "अज्ञानतावश पूजा करते हैं," लेकिन शाश्वत बिल्डर, हमेशा के लिए पिता, जीवन के लिए जो नश्वर भाव क्षीण हो सकता है और न ही नश्वर विश्वास नष्ट हो सकता है। हमें मानव की गलतफहमियों को दूर करने और उन्हें जीवन के साथ बदलने की क्षमता का एहसास करना चाहिए जो आध्यात्मिक है, भौतिक नहीं।

9. 493: 28-15

यदि यीशु ने मौत के सपने, भ्रम से लाजर को जगाया, तो यह साबित हुआ कि मसीह गलत अर्थों में सुधार कर सकता है। शक्ति और दिव्य मन की इच्छा के इस घाघ परीक्षण पर संदेह करने की हिम्मत कौन करता है कि मनुष्य हमेशा के लिए अपनी पूर्ण स्थिति में बरकरार रहे, और मनुष्य की संपूर्ण क्रिया को संचालित करे?

ने कहा: "कि इस मन्दिर [शरीर] को ढा दो, और मैं [मन] उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा;" और उन्होंने ऐसा थकी हुई मानवता को आश्वस्त करने के लिए किया।

क्या यह विश्वास करना बेवफाई की प्रजाति नहीं है कि मसीहा के रूप में इतना महान कार्य स्वयं या ईश्वर के लिए किया गया था, जिसे यीशु के उदाहरण से अनन्त सद्भाव को बनाए रखने के लिए किसी सहायता की आवश्यकता नहीं थी? लेकिन नश्वर लोगों को इस मदद की ज़रूरत थी, और यीशु ने उनके लिए रास्ता बताया। ईश्वरीय प्रेम हमेशा से मिला है और हमेशा हर मानवीय आवश्यकता को पूरा करेगा। यह कल्पना करना ठीक नहीं है कि यीशु ने दिव्य शक्ति का चयन केवल संख्या के लिए या सीमित समय के लिए ठीक करने के लिए किया, क्योंकि सभी मानव जाति के लिए और सभी समयों में, दिव्य प्रेम सभी अच्छे की आपूर्ति करता है।

कृपा का चमत्कार प्रेम का कोई चमत्कार नहीं है।

10. 242: 1-8

पश्चाताप, आध्यात्मिक बपतिस्मा, और उत्थान के माध्यम से, नश्वर अपने भौतिक विश्वासों और झूठी व्यक्तित्व को बंद कर देते हैं। यह केवल समय का सवाल है "कि छोटे से ले कर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे।" पदार्थ के दावों से इंकार आत्मा की खुशियों की ओर, मानव स्वतंत्रता और शरीर पर अंतिम विजय की ओर एक बड़ा कदम है।

11. 254: 2-15

व्यक्ति सुसंगत हैं, जो देख रहे हैं और प्रार्थना कर रहे हैं, "वे दौड़ सकते हैं और नमित करेंगे, जा रहे हैं और थकेंगे न," जो तेजी से अच्छाई हासिल करते हैं और अपना स्थान प्राप्त करते हैं, या धीरे-धीरे प्राप्त करते हैं और निराश नहीं होते हैं। भगवान को पूर्णता की आवश्यकता है, लेकिन तब तक नहीं जब तक आत्मा और मांस के बीच लड़ाई नहीं होती और जीत हासिल होती है। अस्तित्व के आध्यात्मिक तथ्य चरण दर चरण प्राप्त होने से पहले खाना, पीना या भौतिक रूप से कपड़े पहनना बंद करना वैध नहीं है। जब हम धैर्यपूर्वक ईश्वर की प्रतीक्षा करते हैं और सत्य की तलाश करते हैं, तो वह हमारे मार्ग का निर्देशन करता है। अपूर्ण नश्वर धीरे-धीरे आध्यात्मिक पूर्णता के चरम को समझ लेते हैं; लेकिन दुर्दशा शुरू करने और होने की बड़ी समस्या को प्रदर्शित करने के संघर्ष को जारी रखने के लिए, बहुत कुछ कर रहा है।

12. 544: 7-17

जन्म, क्षय और मृत्यु वस्तुओं के भौतिक बोध से उत्पन्न होते हैं, आध्यात्मिक से नहीं, क्योंकि बाद में जीवन उन चीज़ों से नहीं बनता जो मनुष्य खाता है। पदार्थ इस शाश्वत तथ्य को नहीं बदल सकता कि मनुष्य का अस्तित्व इसलिए है क्योंकि ईश्वर का अस्तित्व है। अनंत मन के लिए कुछ भी नया नहीं है।

विज्ञान में मन न तो पदार्थ उत्पन्न करता है और न ही पदार्थ मन उत्पन्न करता है। किसी भी नश्वर मन में

बनाने या नष्ट करने की शक्ति या अधिकार या ज्ञान नहीं है। सब कुछ एक ही मन के अधीन है, यहाँ तक कि ईश्वर भी।

13. 428: 3-14

जीवन वास्तविक है, और मृत्यु भ्रम है। यीशु के मार्ग में आत्मा के तथ्यों का प्रदर्शन भौतिक अर्थों के सबसे गहरे दर्शन को सामंजस्य और अमरता में बदल देता है। इस सर्वोच्च क्षण में मनुष्य का विशेषाधिकार हमारे मास्टर के शब्दों को साबित करना है: "कि यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा।" झूठे न्यासों और भौतिक साक्ष्यों के बारे में विचार करने के लिए ताकि आध्यात्मिक तथ्य सामने आ सकें — यह महान प्राप्ति है जिसके माध्यम से हम असत्य को मिटा देंगे और सत्य को स्थान देंगे। इस प्रकार हम मंदिर, या देह को सच में स्थापित कर सकते हैं, "जिसका निर्माता और निर्माता भगवान है।"

14. 200: 9-12 (से 1st)

जीवन है, था, और हमेशा सामग्री से स्वतंत्र रहेगा; क्योंकि जीवन ईश्वर है, और मनुष्य ईश्वर का विचार है,

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6